खजुराहो समारोह में बरसा कई शैलियों का रंग

शशिप्रभा तिवारी

खजुराहो के मंदिरों की पृष्ठभूमि में हर साल खास नृत्य समारोह का आयोजन किया जाता है। हमेशा की तरह समारोह का आयोजन मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग, उस्ताद

मोनिषा नायक का कथक

अलाउद्दीन खां संगीत और कला अकादमी और मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद की ओर से किया गया। समारोह 20 फरवरी को मोहिनीअट्टम नृत्य से शुरू हुआ। नृत्यांगना दीप्ती ओमचेरी भल्ला ने मोहिनीअट्टम पेश किया। कुचिपुडी और भरतनाट्यम युगल नृत्य पद्मनी कृष्ण और द्रौपदी प्रवीण ने पेश किया। समारोह के पहले दिन ओडिशी नर्तक विचित्रनंदन स्वाईं और साथी कलाकारों ने सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया।

समारोह की दूसरी शाम जयपुर घराने की कथक नृत्यांगना मोनिषा नायक ने कथक नृत्य पेश किया। उन्होंने अपने नृत्य का आरंभ सूर्य स्तोत्र से किया। यह राग वैरागी और तीन ताल में निबद्ध था। उन्होंने तीन ताल में शुद्ध नृत पेश किया। उनकी पेशकश में द्रुत लय में 31 चक्कर और जुगलबंदी खास रही। उन्होंने बसंत बहार को जयदेव की अष्टपदी में दर्शाया। अष्टपदी 'ललित लवंग लता' राग वसंत और तीन ताल में निबद्ध थी। ओडिशी नृत्य सुभिक्षा मुखर्जी और ऐश्वर्य सिंहदेव ने पेश किया। मंगलाचरण और पल्लवी की पारंपरिक शुरुआत के बाद दशावतार नृत्य प्रस्तुत किया। पंडित भुवनेश्वर मिश्र की संगीत रचना पर आधारित यह प्रस्तुति राग केदार और झंपा ताल में निबद्ध थी। कवि जयदेव की रचना 'जय जगदीश हरे' पर आधारित प्रस्तुति में इस युगल ने विष्णु के दस अवतारों का निरूपण हस्तकों और भंगिमाओं से किया। उनका नृत्य सहज था। पर संगीत, विशेषकर गायन पक्ष काफी कमजोर प्रतीत हो रहा था।

असम के सत्रीय नृत्य गुरु घनाकांत बोरा के शिष्य-शिष्याओं ने सत्रीय नृत्य पेश किया। उनकी प्रस्तुति का आरंभ कृष्ण-वंदना से हुआ। कीर्तन परंपरा की रचना 'कृष्ण वासुदेव देवकीनंदन' पर आधारित थी। राजघड़िया रामदानी उनकी दूसरी पेशकश थी। यह शंकर देव की रचना पर आधारित थी। बहार रामदानी अगली पेशकश थी जो शुद्ध नृत राग अहीर और ताल चुट्टा में निबद्ध थी। संत माधव देव की इस रचना में कृष्ण के सौंदर्य का वर्णन था।

नृत्य

खजुराहो नृत्य समारोह की तीसरी शाम को अरूपा लाहिड़ी, सुरश्री, अनुसुइया, राकेश व राजेश मजूमदार और रानी कर्णा की शिष्याओं ने नृत्य पेश किया। इस शाम का आगाज अरूपा लाहिड़ी के भरतनाट्यम से हुआ। उनकी पहली प्रस्तुति पुष्पांजलि से हुई। दूसरी पेशकश 'कौतुवम जयत्वं देवी चामुंडे जयभूतपहारिणी' राग हंसध्वनि और ताल खंड चापू में निबद्ध थी। अगली पेशकश पुरंदरदास की कृति पर आधारित थी। यह राग मालिका और आदि ताल में निबद्ध थी। अरूपा ने अपने नृत्य का समापन तिल्लाना से किया। यह राग मोहनम कल्याणी और आदि ताल में निबद्ध था।

कथक और मयूरभंज छऊ की युगल शैली समारोह की अगली पेशकश थी। कथक नृत्यांगना सुरश्री भट्टाचार्य और अनुसुइया मजूमदार के साथ छऊ नृत्य के कलाकार राकेश व राजेश साईं राम ने इस प्रस्तुति में शिरकत की। उनकी प्रस्तुति अर्धांगेश्वर शिव की वंदना 'अर्धांग भस्म भभूत सोह अर्धांग मोहिनी रूप है' से शुरू हुई। कथक नृत्यांगनाओं ने तीन ताल में शुद्ध नृत्त को पिरोया। उन्होंने तराना, ध्रुपद 'शिव शिव शंकर आदिदेव' और शिवतांडव स्त्रोत में अपने नृत्य को विस्तार दिया।

कथक नृत्यांगना रानी कर्णा की शिष्याओं ने अपनी गुरु की नृत्य रचना 'पिरोए मोती' को मनोहारी अंदाज में पेश किया। इसमें उस्ताद रहीमउद्दीन डागर की चतुष्पदी, कवित्त, 'मोर मुकुट रजत पीतांबर' राग चंद्रकौंस व तीन ताल में निबद्ध सितार जुगलबंदी शुमार में गिनती की तिहाइयों और तराने को शामिल किया गया था। नृत्यांगना देवश्री, शोभिनी प्रिया, शालिनी व सुलग्ना ने इस प्रस्तुति में शिरकत की।